विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम **दिनांक -29 - 01 - 2022**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक - पंकज कुमार**

सुप्रभात् बच्चों आज अलंकार के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

उपमा अलंकार

काव्य में जब दो भिन्न व्यक्ति, वस्तु के विशेष गुण, आकृति, भाव, रंग, रुप आदि को लेकर समानता बतलाई जाती है अर्थात् उपमेंय और उपमान में समानता बतलाई जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। जैसे- नीलिमा चन्द्रमा जैसी सुन्दर है पंक्ति में नीलिमा और चन्द्रमा दोनों सुन्दर होने के कारण दोनों में सादृश्यता (मिलता-जुलतापन) स्थापित की गई है।

दो पक्षों की तुलना करते समय उपमा के निम्नलिखित चार तत्वों को ध्यान में रखा जाता है।

उपमेय

(जिसकी उपमा दी जाय।)

वर्णनीय व्यक्ति या वस्तु यानी जिसकी समानता अन्य किसी से बतलाई जाती है। जैसे- चांद-सा सुंदर मुख इस उदाहरण में मुख उपमेय है।

उपमान

(जिससे उपमा दी जाय।)

वह प्रसिद्ध वस्तु या प्राणी जिससे उपमेय की तुलना की जाए, उपमान कहलाता है। उसे अप्रस्तुत भी कहते हैं। ऊपर के उदाहरण में चाँद उपमान है।

समान धर्म

(जिस गुण आदि को लेकर उपमा दी जाय।)

उपमेय और उपमान का परस्पर समान गुण या विशेषता व्यक्त करने वाले शब्द साधारण धर्म कहलाते हैं। इस उदाहरण में सुंदर साधारण धर्म को बता रहा है।

वाचक शब्द

(जिस शब्द से उपमा प्रकट की जाय।)

जिन शब्दों की सहायता से उपमा अलंकार की पहचान होती है। सा, सी, तुल्य, सम, जैसा, ज्यों, सरिस, के समानआदि शब्द वाचक शब्द कहलाते हैं। अन्य अदाहरण-

१. पीपर पात सरिस मन डोला।

२. कोटि कुलिस सम वचन तुम्हारा।

पहले उदाहरण में उपमेय (मन), उपमान (पीपर पात), समान धर्म (डोला) तथा वाचक शब्द (सरिस) उपमा के चारों अंगों का प्रयोग हुआ है अतः इसे पूर्णोपमा कहते हैं जबकि दूसरे उदाहरण में उपमेय (वचन), उपमान (कोटि कुलिस) तथा वाचक शब्द (सम) का प्रयोग हुआ है यहाँ समान धर्म प्रयुक्त नहीं हुआ है अतः इसे लुप्तोपमा कहा जाता है। क्योकि इसमें उपमा के अंगों का समावेश नहीं है।

उदाहरण - 1

मखमल के झूल पड़े, हाथी-सा टीला।